Q. समाजीकरण से आप क्या समझते हैं? इसकी प्रक्रिया क्या है? एवं एजेंसियाँ क्या है? (What do you understand by socialization? what is its process and agencies?

Ans→ समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके आधार पर मानव अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। व्यक्तित्व में केवलमात्र शारीरिक एवं मानसिक विशेषताएँ ही नहीं आ पाती है या केवल एक ही प्रकार के विकास से इसका अभिप्राय: नहीं बल्कि व्यक्तित्व का विकास का अभिप्राय: शारीरिक, मानसिक रूप से विकास करना होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समाजीकरण व्यक्तित्व का विकास करने का महत्वपूर्ण साधन है।

इस संबंध मे विद्वान समाजशास्त्रीयों सेल्जनिक एवं ब्रूम ने इस बात को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि समाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसमे मानव का शारीरिक, मानसिक क्षमताओं, स्वत्व, व्यवस्थित-व्यवहारो, मूल्यो, आदर्शो को विकास भली प्रकार से सम्भव हो पाता है। इसके अलावा समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति अपने आपको सामाजीक जीवण का अंग बना पाता है।

विभिन्न समाजशास्त्रीयो ने समाजीकरण कि जो परिभाषाये दी है उसमे से कुछ प्रमुख इस प्रकार है।

(i) किम्बाल यंग (Kimball Young) → के मतानुसार, समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजीक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र मे प्रवेश करता है और समाज के विभिन्न समूहो का सदस्य बनता है। जिसके द्वारा उसको समाज के मूल्यो और मानको को स्वीकार करने की प्रेरणा मिलती है।

(ii) ग्रीन (Green A.W) के अनुसार → लोकव्यवहार को सिखने के ही प्रक्रिया को ही समाजीकरण कहते है।

(iii) गिलिन तथा गिलिन (Gillin and Gillin) ने भी समाजीकरण को अनुकूलन कि प्रक्रिया माना है। इसके अनुसार समाजीकरण से हमारा ~~...~~ तात्पर्य एक ऐसी प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्ति समूह का सक्रिय सदस्य के रुप मे विकसीत हो जाता है।

(iv) जॉनसन (~~...~~ Johnson) ने लिखा है कि समाजीकरण एक वह सबक है जो सिखने वाले को सामाजिक दायित्वो का निर्वाह का योग्य बनाता है।

(2)

(v) न्यूमेयर (Newmayer) के अनुसार एक व्यक्ति के सामाजिक प्राणि के रूप मे परिवर्तन होने कि प्रक्रिया का नाम ही समाजीकरण है।

समाजीकरण कि प्रक्रिया → समाजीकरण कि प्रक्रिया को विभिन्न विद्वानो ने विभिन्न स्तरो मे विभाजीत किया है। जो इस प्रकार है।

(1.) किंग्सले डेविस के अनुसार →
(i) व्यक्तित्व के दूसरे निर्धारको तथा समाजीकरण कि सम्बन्ध
(ii) आत्मा का विकास
(iii) समाजीकरण के अभिकरण

(2.) प्रो० जॉनसन ने चार स्तरो के माध्यम से समाजीकरण प्रक्रियो को स्पष्ट किया है।
(i) मौखिक अवस्था →
(ii) शैशवावस्था
(iii) तद्दात्मीकरण अवस्था

प्रो० जॉनसन ने बच्चो मे तीन प्रकार के गुणो का समावेश करने का प्रयत्न किया है।
(i) सामाजिक दायित्वो को बच्चा ग्रहण करे
(ii) अन्य व्यक्तियो के समान व्यवहार करे।
(iii) आत्मा का विकास करके व्यक्तित्व का विकास करे।

(3.) फ्रायड ने समाजीकरण कि प्रक्रिया का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया है।
(i) शिशु अवस्था
(ii) पूर्व जननिक
(iii) मौखिक स्तर
(iv) गुदा स्तर
(v) प्रारम्भिक जननिक
(vi) गुप्त काल
(vii) तरुणावस्था

(4.) समाजशास्त्री पारसन ने भी समाजीकरण कि सम्पूर्ण प्रक्रिया को निम्नांकित चार भागो मे विभाजीत किया।
(i) मौखिका अवस्था
(ii) शौच सोपान
(iii) आडिपल सोपान
(iv) किशोरावस्था

× × ×